

DPN 6468

विभूतिधारण विधि VIBHŪTĪ DHARANA VIDHĪ  
(विभूति स्नान) (VIBHŪTĪ SNANA)

Title :

Run. No. 7193

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. / गनं गनं नेपालमा निर्देश

Size in cms. 14.3 x 6.1

Folios 4

Lines ( in a page ) 7

Newa direction rarely

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

अथ विभूति धारण विधि : ॥

इति विभूति धारण विधानं समाप्तम् ॥

0 cms.

5

10

15

20

25



विहगिज्ञान

0 cmts.

5

10

15



विहगिज्ञान

0 cmts.

5

10

15



१ अथ विरुगिध्वनल विधिः॥ मृषिचुन्दः॥ ॐ विरुगि  
मरुमनुस्य अथात्र मृषिचुन्दः॥ मृषिचुन्दः॥ ॐ विरुगि  
गाहदि ॐ वीरुगि नमः॥ ॐ विरुगि वायव्यकालकर्ममविरुगि  
ध्वनल विनिथागः॥ विरुगि वायव्यकर्ममविरुगि  
॥ ॐ विरुगि विरुगि नामासि वायव्यकर्ममविरुगि  
ध्वनल विनिथागः॥ ॐ विरुगि वायव्यकर्ममविरुगि  
उल्लमिगिरुस सुलमिगिरुस वायव्यकर्ममविरुगि सर्वरु

वायव्यकर्ममविरुगि ॥ ॐ कालाग्निवृद्धाय नमः॥ उल्लम  
सिलाय नमः॥ विवाय अंगुष्ठन उल्लमिगिरुस ॥ रुस  
द्वयन वायव्यकर्ममविरुगि वायव्यकर्ममविरुगि  
नमः॥ विरुगि वायव्यकर्ममविरुगि वायव्यकर्ममविरुगि  
॥ पुनर्कृत्य ॥ ॐ नैरुव ॥ ध्वनल ॥ मृषिचुन्दः॥ ॐ विरुगि  
॥ ॐ वीरुगि नायनमः॥ वध्वर्ग ॥ ॐ अथात्राय नमः  
॥ लल्लोट ॥ ॐ मत्पूवृषाय नमः॥ रुदय ॥ ॐ सधाजा



गायनमः॥ दक्षिणवाहो॥ ॐ वामदवायनमः॥ वाम  
वाहो॥ ॐ निवायनमः॥ दक्षिणकूर्यत्र॥ ॐ मदग्वना  
यनमः॥ वामकूर्यत्र॥ ॐ गम्वनमः॥ दक्षिणमलि  
वर्ध॥ ॐ यिनाकिनमः॥ वाममलिर्वर्ध॥ ॐ गनि  
लखनायनमः॥ नाहो॥ ॐ वामदवायनमः॥ यष्ट  
द॥ ॐ विवूयाकायनमः॥ क॥ ॐ कयातिनः

नमः॥ अंगुष्ठादिर्वर्ध॥ ॐ नीललाहिगायनमः॥ सर्व  
जनमवर्गकवृशस्वाहा॥ ॐ निजलनरुसंपदात्वा॥  
॥ ॥ गतादक्षिणरुसुनजलंगृहीत्वामूलमकुंठावाव  
गुयं आचम्य॥ वामकवृजलंगृहीत्वामूलमकुंठाव  
ववायं स्वगित्रसिस्त्रियत॥ गतामंधादिगर्धो  
कात्रयत॥ ॐ निविरुतिधवणविधानसमायम्॥



5

0

cmts.

5

10

15





5

0

cmts.

5

10

15





१ नवोदुःखं सर्वसौम्यं ककुमृष्वधुधनी। मानदानीं गुत्रोदुःखं  
 गुत्रोदुःखं विचारवत् ॥ नमो नुसर्वयोषधे नृणां दुःखकर्मणि ॥  
 धन्यो वाणी विधेयैः नैमिशो भवधुःखं गुण्यं। जीवसंयत्तु ॥  
 उद्योमाद्यन्तं न विद्युः ॥ कालरात्रायाश्च क्यु ॥ ॥  
 १ अथ नूदाक ॥ धनमस्तु ॥ उँ क्रीं १ ॥ उँ क्रीं २ ॥ उँ क्रीं ३ ॥  
 उँ क्रीं ४ ॥ उँ क्रीं ५ ॥ उँ क्रीं ६ ॥ उँ क्रीं ७ ॥ उँ क्रीं ८ ॥ उँ क्रीं ९ ॥

उँ क्रीं १० ॥ उँ क्रीं ११ ॥ उँ क्रीं १२ ॥ उँ क्रीं १३ ॥ उँ क्रीं वाँ र्दस १४ ॥  
 कमुखं निमिः जिमयं मुख्यामस्तु ॥